Manu; ivaprasda Sitraihinda <Rja> [Editor]: Mnava-dharma-sra: artht Sakipta Mnava-dharma-stra ; Hind-anuvda-sahita
Lakhana, 1926 Seite 43

(१३२) यादृशोऽस्यभवेदात्मा यादृशञ्च चिकीर्षितम् ॥
यथा चोपचरेदेनं तथात्मानं निवेदयेत् २५५

(१३२) जो सज्जनों के मध्य में अपने को छिपाता है अर्थात् जैसा है वैसा नहीं बतलाता सो लोक में बड़ा पाप करने वाला है और चोर है अर्थात् अपनी आत्मा को चुराता है ॥ २५५ ॥

(१३३) योऽन्यथासन्तमात्मानमन्यथासत्सु भाषते ॥
सपापकृत्तमो लोके स्तेनआत्मापहारकः २५६

(१३३) जितने अर्थ हैं सो सब वाणी में रहते हैं वाणी उनका मूल है वाणी से निकलते हैं उस वाणी को जिसने चुराया (अर्थात् जो झूठ बोला) सो सब वस्तु का चुराने वाला हुआ ॥ २५६ ॥

पञ्चम अध्याय ॥

(१३४) यो बन्धनवधक्लेशान्प्राणिनां न चिकीर्षति ॥
स सर्वस्य हितप्रेप्सुः सुखमत्यन्तमश्नुते ४६

(१३४) जो सब जीवों को बन्धन और वध का क्लेश देने की इच्छा नहीं करता सो सबका हितकारी है अति सुख को पाता है ॥ ४६ ॥

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/sivaprasada1926/0051
gefördert durch die DFG